Look n Learn
Children's Jain Magazine

Rs. 5.00/-

25th October 2016 I Every Fortnight I English, Hindi & Gujarati

कया मैं हर वकत खुश हुँ?

Year - 9, Vol: 8, Issue: 06, Date: 25.10.2016
Editor: Ashokbhai Sheth 20, Vanik Niwas, 1st floor, Cama Lane, Ghatkopar (West), Mumbai - 400 086.

प्यार और मैत्री का पर्व दिवाली

दान और क्षमा

हम अपने परिवार के लिए नए कपड़े खरीदते है । आओ इस दिवाली पर दान की भावना रखें । अपने मददगार, मजदूरों के लिए नए कपडे खरीदें । अनाथ बच्चों को मिठाईयाँ, खिलौने, पुस्तके, पेन्सिल आदि दान करें ।

आओ इस दिवाली में जरुरतमंद लोगो को देने में जो खुशी मिलती हैं उसका अनुभव करें ।

चलो, इस दिवाली पर किसी ने हमारे साथ जो भी बूरा किया है उसे भूल जाएँ और उन सबको माफ कर दें। याद रखे... जो लोग कमजोर होते हैं, वह दूसरों को माफ नहीं कर सकते। जिसका दिल साफ होता है वह माफ कर सकता है।क्षमा वीरस्य भूषणम् ।

एकता और एकत्व

दिवाली का त्योहार हम सबको एक करता है । हर व्यक्ति एक दूसरे से मिल जुलकर त्योहार मनाते हैं। मन से शत्रुता के भाव निकाल देते हैं । एक दूसरे से प्यार से मिलते हैं । एक दूसरे से शुभेच्छा प्रगट करके संकारात्मकता महसूस होती हैं।

चलो, हम भी प्यार भरे एकताभाव की ओर चले। याद रखे, एकता सफलता की सीढ़ी है।

समृद्धि और सिध्धि

अपने आंतरिक मन को प्रकाशित करें, दिये के प्रकाश के जैसे अपने मन के प्रकाश को और प्रज्वलित करें और हृदय को शुद्ध करें, चलो... इस दिवाली हम परमात्मा के आशीर्वाद से मोक्षमार्ग की प्राप्ति और सिद्धि की मंगल कामना करे।

राष्ट्रसंत पू. गुरुदेव श्री नम्रमुनि महाराज साहेब की प्रेरणा से...

ज्ञान के प्रति किये हुए अनादर का पश्चाताप करने के लिए...

ज्ञान पूजन के अपूर्व अवसर

में अवश्य भाग ले।

On - 4th November 9:00 AM.

At Paramdham
Valkas Village, District- Thane

Cheque or Draft:
Arham Yuva Group

Parasdham
Vallabh Baug Lane, Tilak Road,
Ghatkopar (E), Mumbai - 77

Subscription for 10 years:
India : Rs. 1000/-
Abroad : Rs. 5000/-

दीदी: प्यारे बच्चों, हम सब यह जानते हैं, कि इस दुनिया में कोई भी दो चीजें एक समान नहीं हैं। सभी एक दुसरे से भिन्न हैं, अनोखे हैं। दो जीव भी एक दुसरे से अलग है भिन्न है। कुछ जीव उड़ सकते हैं तो कुछ जीव पानी में तैर सकते हैं। कुछ जीव केवल पानी में रहते हैं तो कुछ पानी और जमीन दोनों पर रह सकते हैं। जब हम अपने आस-पास में रहने वाले व्यक्तियों को देखते हैं तब यह एहेसास होता है कि हम सब भी कितने विभिन्न और अनोखे हैं।

कोई पैसों से अमीर है तो किसी के पास अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए भी पैसे नहीं है।

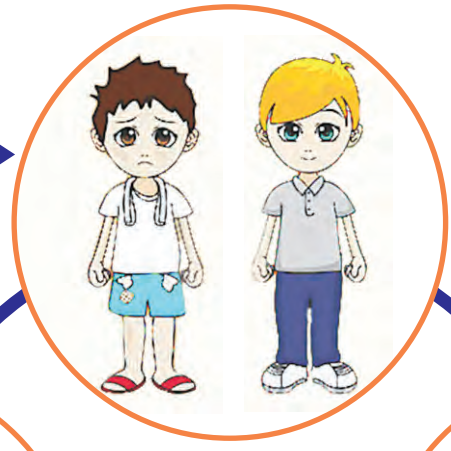

कोई लंबा है तो कोई बौना।

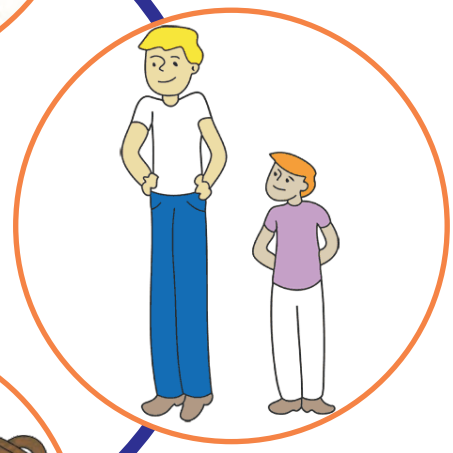

कोई सुंदर है, तो कोई कुरुप।

कोई गोरा है, तो कोई श्याम रंग का है।

क्या आपने कभी यह सोचा है कि ऐसा क्यों होता है? यहाँ एक कहावत याद आती है।

"जैसा बोओ वैसा पाओ", मतलब - जैसा आप बोओगे वैसा ही आप पाओगे। जो आपने बोया है, यानि आपने जैसे कर्म किए हैं, वैसा ही फल आप पाओगे। यदि आप आज अच्छा और सही काम करोगे तो कल उसका फल जरुर अच्छा ही मिलेगा।

राज : मैं और करण दोनों बहुत ही पक्के दोस्त है। दोनों एक ही स्कुल में जाते है, एक ही कक्षा में पढ़ते हैं, पढ़ाई भी दोनों साथ ही करते है। फिर भी करण हमेशा परीक्षा में अव्वल आता हैं और मैं पढ़ाई में काफी पीछे रह जाता हुँ ऐसा क्यों?

दीदी : ऐसा इसलिए हो सकता है क्योंकि राज तुमने शायद ऐसी कुछ गलतियाँ की होंगी...

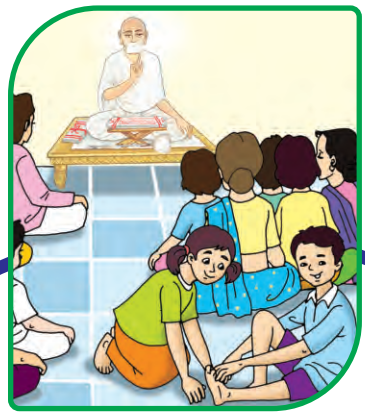

सुदेव, सुगुरु, सुधर्म का विनय नहीं किया होगा।

किताबें फेंकी होगी,

किताब के पन्ने फाड़े होंगे, किताबों पर पैर दिया होगा।

शायद किसी को पढ़ाई करते वक्त परेशान किया होगा।

दीदीः तो राज, यदि आप को कम मेहनत से अच्छे अंक चाहिए, यदि आप सफल होना चाहते हैं तो वही कीजिए जो करण ने किया।

सुदेव, सुगुरु, सुधर्म का सम्मान करना।

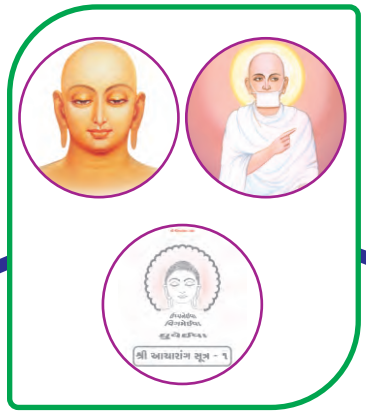

दूसरों को पढ़ाई के समय उपयुक्त वातावरण बनाना।

पाठशाला में बच्चों को प्रभावना दे जिससे उन्हें प्रोत्साहन मिले और वे धर्म का ज्ञान प्राप्त करे।

किताबें और अन्य लेखन सामग्री का दान करना।

जरूरतमंद बच्चों को पढ़ाई में मदद करना।

राज : अच्छा दीदी, क्या यह सब करने के बाद मैं भी पढ़ाई में अव्वल आउँगा?

दीदी : हाँ राज! क्यों नहीं?

राज : धन्यवाद दीदी!

श्रेया : दीदी, मैं और प्रीति दोनों बहने है। मेरी आँखे कमजोर है। और मैं बौनी, मोटी और श्याम वर्णीय भी हूँ और चश्मे भी पहनती हूँ। प्रीति बहुत सुंदर दिखती है। वह व्यावहारीक है और उसकी आवाज भी सूरीली है। ऐसा क्यों?

दीदी : शायद श्रेया,

दीदी : तो श्रेया, अच्छी दृष्टि और अच्छा बनने के लिए हमें यह करना चाहिए...

ज्यादा टी.वी. नहीं देखना चाहिए।

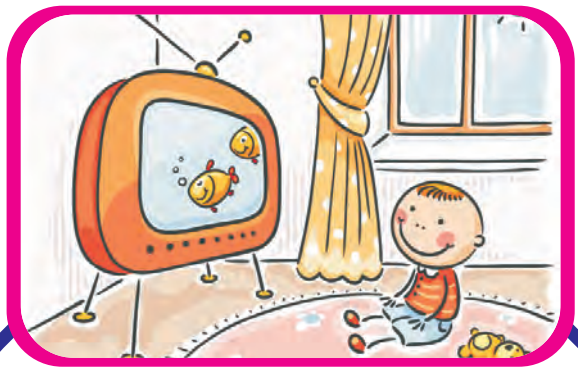

सभी जीवों को उचित मान-सम्मान देना चाहिए।

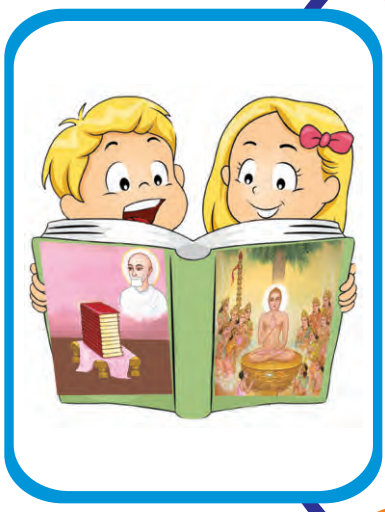

अच्छी किताबें पढ़ने में समय बिताना चाहिए।

किसी को गलत सलाह नहीं देनी चाहिए।

दीदी : मोहित, तुम कल "जैन प्रदर्शनी" में क्यों नहीं आए? तुम्हें तो बहुत उत्सुकता थी देखने की?

मोहित : हाँ दीदी, मैं आना चाहता था, पर मैं बीमार पड गया था। मेरे साथ ऐसा ही होता है। जब भी कोई शुभ प्रसंग हो तब मैं किसी न किसी कारण से वहाँ नहीं जा पाता।

दीदी : मोहित, इसे अंतराय कर्म कहते हैं। यह वह कर्म है जिसमें तुम चाहते हुए भी शुभ प्रसंग एवं अच्छे कार्य में भाग नहीं ले सकते।

मोहित : दीदी, मैंने ऐसे कर्म कैसे बाँधे होंगे?

तुमने कभी अन्य को दान नहीं दिया होगा।

शायद तुमने बहुत पटाखें जलाए होंगे।

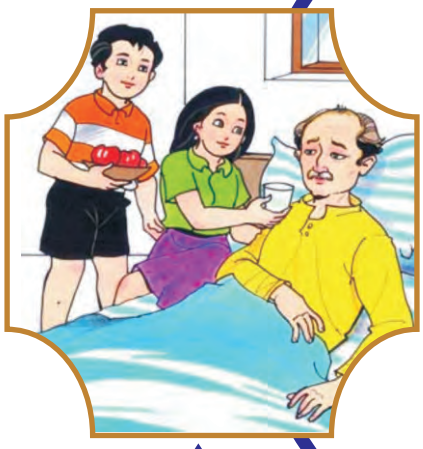

तुमने किसी को कभी सेवा करने से मना किया होगा।

तुमने कभी किसीको धर्म साधना करते समय परेशान किया होगा।

मोहित : तो दीदी, अब इन कर्मों को कैसे क्षय करूं?

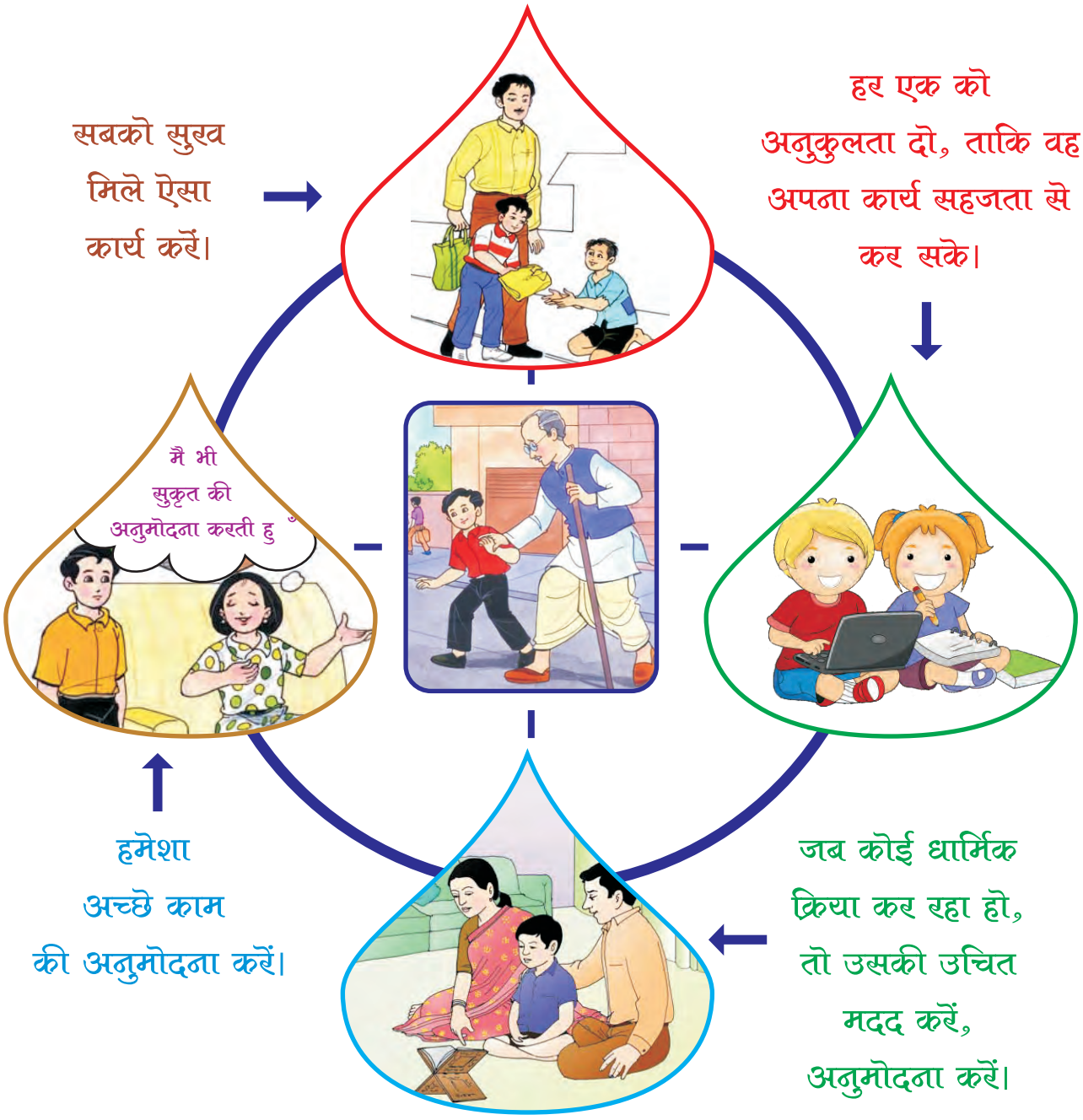

मोहित : वाह दीदी! हमारे परमात्मा ने खुश होने के लिए कितने आसान रास्ते बताए हैं। शुक्रिया, परमात्मा! हमें हमेशा सही राह बताने के लिए।

SAY NO TO CRACKERS

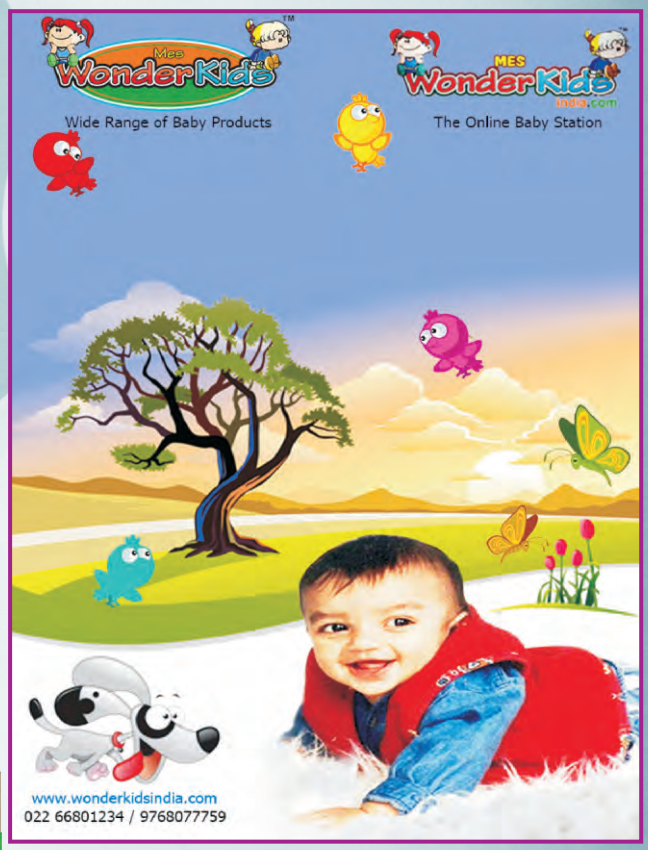

LET'S FILL OUR HOME WITH LIGHTS OF HAPPINESS AND NOT WITH FUMES AND CRACKERS!

दीदी : आओ बच्चों हम ऐसे तीर्थंकर के जीवन चरित्र जाने जो बिलकुल हम जैसे सामान्य थे। परंतु जीवन में त्याग और वैराग्य से वह सामान्य से असामान्य हो गए और वह हमारे २४ तीर्थंकरों में से १९ वे तीर्थंकर बने! श्री मल्लिनाथ भगवान एक ऐसे तीर्थंकर थे जिनका स्त्री रुप में अवतरण हुआ और वह मोक्षगामी बने।

"श्री मल्लिनाथ भगवान"

लांछन : कुंभ

प्रथमभवः महाबल राजा

अपरविदेह क्षेत्र में विटशोका नगर था। नगर के राजा महाबल थे। राजा महाबल की ६ अन्य राजाओं के साथ बहुत ही गहरी दोस्ती थी। ज्ञानीओं के प्रवचन सुनकर राजा महाबल आध्यात्मिक राह पर चल पड़े। यह बात उन्होंने अपने ६ मित्रों को भी बताई जिससे मित्र भी प्रभावित हुए और सातों मित्र संसार त्यागकर साधु बन गए। सभी मित्र धर्म साधना और तप साधना साथ मिलकर करने लगे।

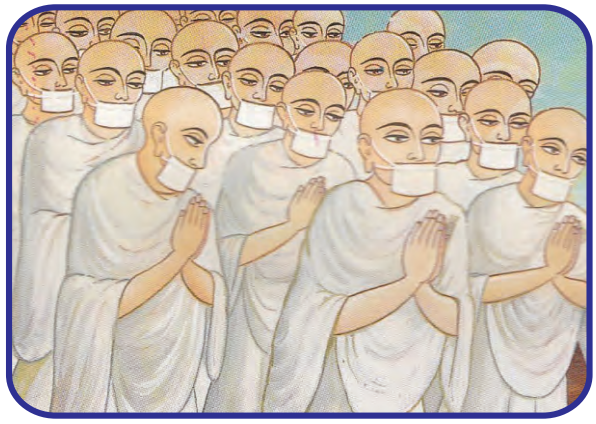

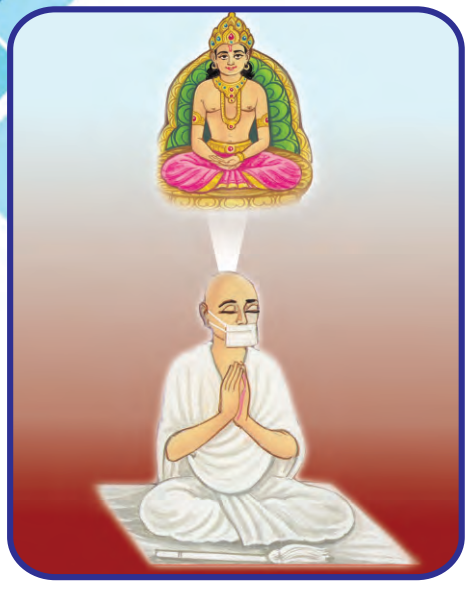

एक दिन महाबल ने सोचा, ''मैं तो सदैव अपने मित्रों से आगे रहा हुँ। धर्म साधना में भी मुझे ही आगे रहना होगा। अगर में अपने मित्रों के साथ ही रहा तो इनसे आगे न जा पाऊँगा। मुझे कुछ ऐसा करना चाहिए जो इन सबसे अलग हो और बढकर हो।''

इस अहंकार ने महाबल को कुछ विशेष करने के लिए प्रेरित किया। जब भी सभी मित्र किसी भी तपस्या करने हेतु पच्चक्खाण लेते तो महाबल किसी न किसी बहाने उनसे ज्यादा तपस्या के पच्चक्खाण लेते। इस छल के कारण महाबल के अशुभ नाम कर्म का बंध हुआ।

तप की शुद्धता के कारण महाबल मुनि ने तीर्थंकर नाम गोत्र पद बाँध लिया था।

छल से तप करने की वजह से, उन्हें अगले भव में स्त्री वेद मिला।

दुसरा भवः देवलोक में देव

सातों मित्र का ६0 दिनों की तपस्या के बाद कालधर्म हुआ, आयुष्य पूर्ण कर अनुत्तर विमान में देव बने।

तिसरा भव : मल्लिनाथ भगवान

महाबल मुनि का जीव अनुत्तर विमान से निकलकर मिथीला नगरी के राजा, कुम्भ की रानी प्रभावती के गर्भ में आया। जब रानी प्रभावती गर्भ से थी, तब एक बार उन्हें पंच रंगी फूलों की सेज पर बैठकर सुगंधी फूलों के गुच्छे से सुगंध लेने की प्रबल इच्छा जागृत हुई।

मल्लि कुमारी का जन्म

मार्घशीष सुद ग्यारस को रानी प्रभावती ने एक सुंदर लड़की को जन्म दिया। इतिहास में कभी ऐसा नहीं हुआ कि तीर्थंकर नामगोत्रवाला जीव लड़की बनकर जन्म ले। पर कर्म सत्ता के आगे कौन जीता है? सुंदर बालिका का नाम मल्लिकुमारी रख दिया।

दिव्य बाली

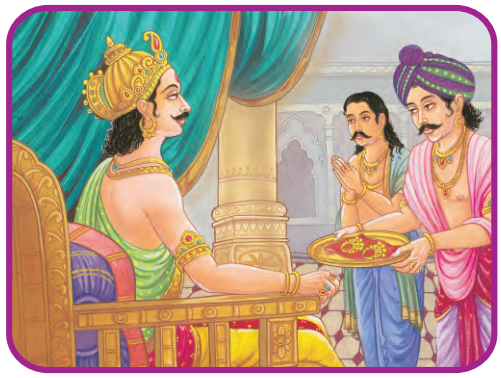

एक बार एक बहुत प्रख्यात और अमीर व्यापारी अर्हनीक समुद्रिक यात्रा पर गया। वह विदेश में काफी धन कमाकर लौट रहा था, कि अचानक समुद्र मे तूफान आया। इस खतरनाक तूफान में भी अर्हनीक ने अपनी परमात्मा की तपस्या, भक्ति नहीं छोडी । इस भक्ति को देखकर, जिस देव ने यह तुफान उत्पन्न किया वह देव जिन भक्त अर्हनीक पर प्रसन्न हुए और अर्हनीक को कान की दिव्य बालियाँ दी।

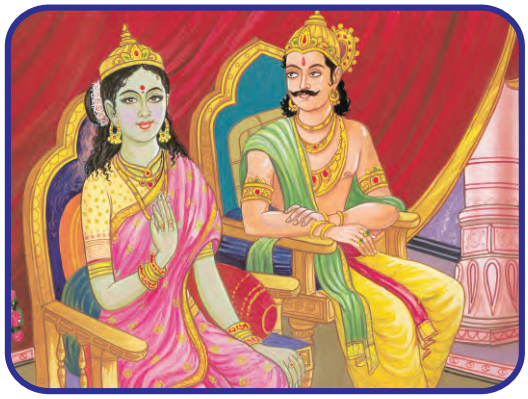

जब अर्हनक मिथीला पहुँचे तो उन्होंने देखा कि सभी व्यापारी राजकुमारी मल्लिकुमारी को भेट देने हेतु जा रहे थे। अर्हनीक भी वहाँ पहुँचे। और दिव्य बालियाँ राजकुमारी को भेट कर दी। राज सभा में राजा सहीत सारे लोग उन बालियों को देखकर आश्चर्य चकित हो गए।

एक बार एक बाली जरा सी टूट गई थी। राजा कुंभ ने राज्य के सारे सुनारों को बुलाया कि वह बालियाँ ठीक कर दे। परंतु कोई सुनार ठीक न कर पाया। क्रोधित होकर राजा ने उन सुनारों को राज्य से बाहर निकाल दिया। जहाँ भी वह सुनार जाते वहाँ राजकुमारी मल्लि के रुप की प्रशंसा करते।

६ राजाओं का हृदय परिवर्तन

उसके पूर्व जन्म के ६ मित्रों ने भी अनुत्तर विमान से अपना आयुष्य पूर्ण करके पुण्य के कारण राजसी परिवारों में जन्म लिया। उनके नाम थे...

१. संकेतपुर के राजा प्रतिबुद्ध
२. चंपा के राजा चंद्रजय
३. श्रावस्ती के राजा रुप
४. वाराणसी के राजा शंख
५. हस्तिनापुर के राजा अदीनशत्रु
६. कंपील्यपुर के राजा जीतशत्रु

राजकुमारी मल्लि की सुंदरता की प्रशंसा सुनकर इन ६ राजाओं ने उनसे शादी करने का न्योता भेजा। राजा कुंभ को इस बात की जान थी कि उनकी बेटी भावी तीर्थंकर थी और वह शादी करना पसंद नहीं करेगी। यदि वे शादी के न्योते का अस्वीकार करते तो ६ के ६ राजा उनके विरुद्ध युद्ध करते। इस दुविधा में चिंतित अपने पिता को देख मल्लिकुमारी ने एक युक्ति निकाली। अपने अवधिज्ञान से मल्लिकुमारी ने यह जान लिया था कि यह ६ राजा तो उनके पिछले जन्म के धर्मसाथी थे।

एक बगीचे में उन्होंने अपना एक पुतला बनवाया जो अंदर से खोखला था। पुतले के गर्दन के पास एक सुराग बनवाया। पास में ६ कमरे बनवाए जिसमें खिडकी थी जहाँ से सिर्फ पुतला दिखता था। यह सब बनवाने के बाद मल्लिकुमारी रोज जो खाना स्वयं खाती थी उसमें से एक मुट्ठी खाना उस पुतले में ड़ालती थी।

जब खाना सड़ने लगा तब उस पुतले में से दुर्गंध आने लगी। मल्लिकुमारी अब अपने पिता के पास गई और कहा कि उन ६ राजाओं को एक एक कर मिलने का न्योता दिजीए। शादी की बात करने के लिए सभी राजा आए और उन्हें ६ कमरों में लाया गया। पुतले को देखकर सभी राजा शादी के सपने देखने लगे। अचानक ही मल्लिकुमारी ने पुतले के गर्दन के पासवाले सुराग का ढक्कन खोल दिया। ६ राजाओं के कमरों में खाना सड़ने की दुर्गंध आने लगी और राजाओं को साँस लेना मुश्किल हो गया।

गुस्से से लालपीले हो कर ६ राजा बाहर आ गए। तब मल्लिकुमारी ने उन सब से कहा कि थोडे से खाने की सड़ने की दुर्गंध आपसे सहन न हो सकी, तो जरा सोचिए कि यह शरीर जो माँस और हड्डियों से बना है उससे आप सब को कितना लगाव है। आप सभी मेरे पिछले जन्म के मित्र हैं जिन्होंने मेरे साथ कितनी सारी धर्म आराधना की थी। फिर अब इस शरीर का मोह क्यूँ? ६ राजाओं को जातिस्मरण ज्ञान हुआ, अपने पूर्वभव का ज्ञान हुआ और वे संसार त्याग कर फिर से संयम जीवन स्वीकारने चले।

मल्लिकुमारी ने भी वर्षीदान करने के बाद दीक्षा ली। दीक्षा लेते ही उन्हें मन:पर्यव ज्ञान उत्पन्न हुआ और कुछ देर बाद केवलज्ञान!

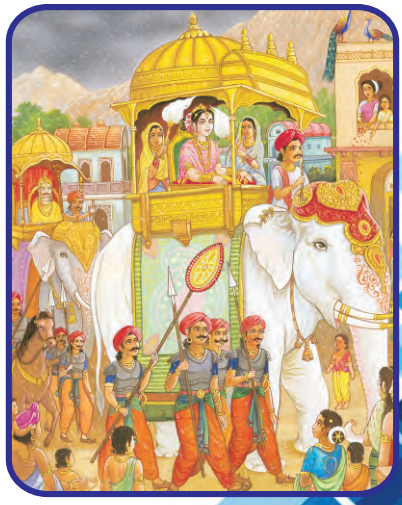

६ राजाओंने भी मल्लिकुमारी की देशना के बाद उनके पास दीक्षा ली।

चैत्र माह के शुक्लपक्ष की चौथ को श्री मल्लिनाथ भगवान सम्मेतशिखर से मोक्ष सिधारे!

શ્રી મલ્લિનાથ ભગવાન

માતા પિતા	પ્રભાવતી કુંભ	કુળ વર્ણ	ઇક્ષ્વાકુ નીલ
પ્રથમ ભવ	મહાબલ	ભવ (સંખ્યા)	3
જન્મ નગર	વીતશોકા (મિથિલા)	ચ્યવન કલ્યાણક	ફાગણસુદ -૪
જન્મ કલ્યાણક	માગસર સુદ -૧૧	દીક્ષા કલ્યાણક	માગસર સુદ -૧૧
કેવળજ્ઞાન કલ્યાણક	ફાગણસુદ- ૧૨	શરીરની ઉંચાઇ	૨૫ ધનુષ્ય
દીક્ષા પર્યાય	૫૪,૯૦૦ વર્ષ	આયુષ્ય	૫૫ હજાર વર્ષ
પ્રથમ શિષ્ય	આર્ય દત્ત	પ્રથમ શિષ્યા	બંધુમતી
સાધુ સંખ્યા	૪૦,૦૦૦	સાધ્વી સંખ્યા	૫૫,૦૦૦
શ્રાવક સંખ્યા	૧,૮૩,૦૦૦	નિર્વાણ સ્થાન	સમ્મેત શિખર

- By Gurubhakt Mehta Parivar

सूचना के अनुसार गिफ्ट बॉक्स बनाईए।
गिफ्ट बॉक्स में मिठाईयाँ भरकर
जरूरत मंद को भेट कीजिए।

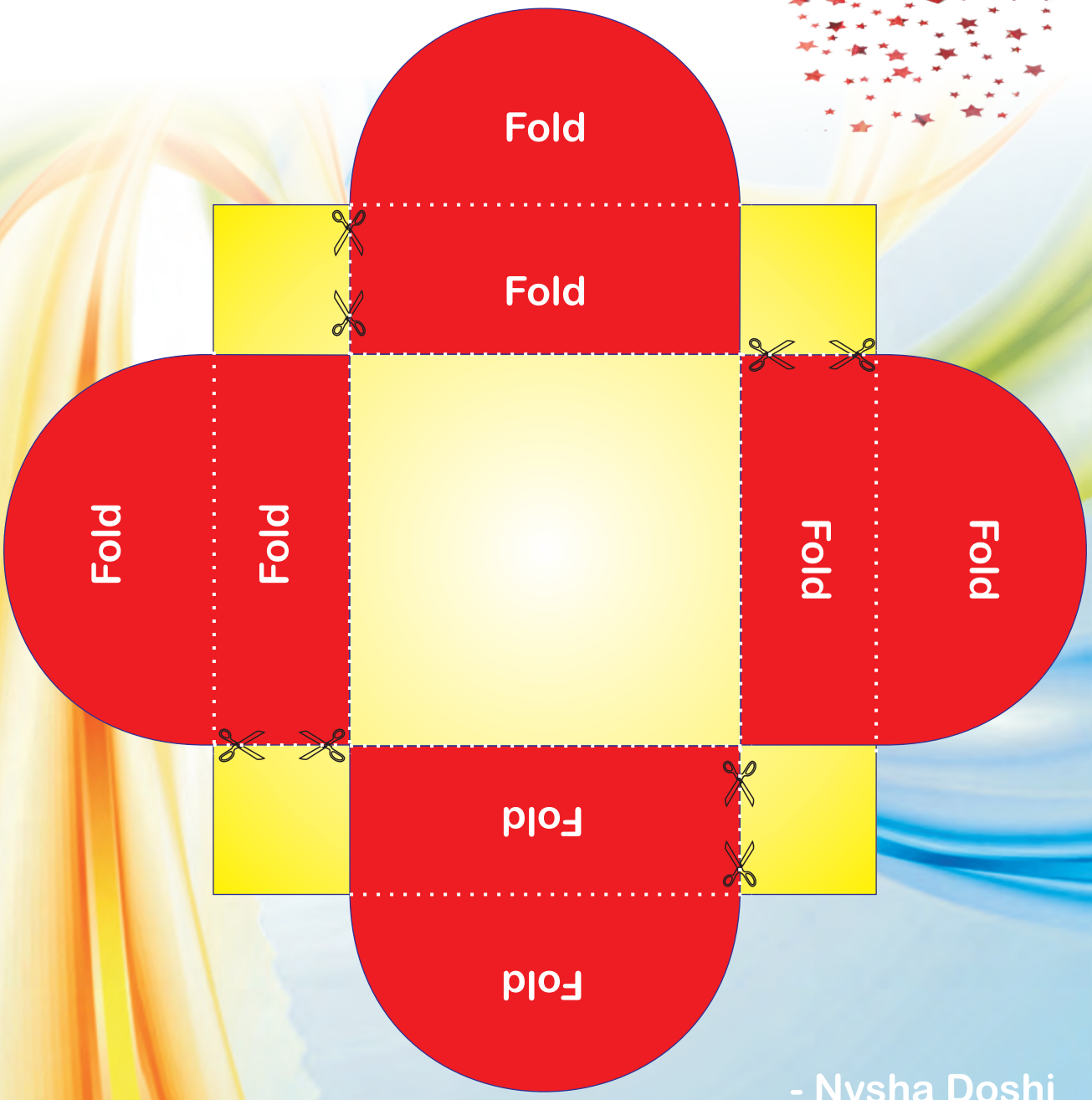

- Nysha Doshi

Registered with Registrar of Newspapers under RNI No. MAH MUL/2011/40056
Vol. : 8, Issue : 06, Date : 25.10.2016, Postal Registration No. MNE/171/2015-17.
Date of Posting / Date of Publication 10th & 25th of every month.
Look N Learn - Posted at Mumbai patrika channel sorting office Mumbai -1

ये रोशनी का पर्व है...
दूसरों की जिंदगी में खुशियों के दीप तुम जलाना।
जो हर दिल को अच्छा लगे ऐसा गीत तुम गाना
दुःख दर्द सारे भूलकर तुम इस दिवाली...
सबको गले लगाना।

Publisher, Printer and Owner Ashok R. Sheth, Printed at : Accurate Graphics Pvt. Ltd.,
15-A, Samrat Mill Compound, L.B.S Marg, Vikhroli (W), Mumbai - 400 079.
Publish at Mumbai : 20, Vanik Nivas, Kama Lane, Ghatkopar (W), Mumbai - 86. Editor : Ashok R. Sheth